भूमिका

परमेश्वर के लिए कलीसिया का बहुत ही महत्व रहा होगा ज़्योंकि उसने इसकी योजना बड़े ही ध्यान से बनाई। स्पष्टतया, यह परमेश्वर के मन में बाद में आया कोई विचार नहीं कि पुत्र पृथ्वी पर आकर अपनी कलीसिया को स्थापित करे, बल्कि उसकी सनातन मंशा का एक भाग थी (इफिसियों 3:11)। परमेश्वर ने मनुष्य पर अपनी योजना को थोड़ा-थोड़ा करके प्रकट किया। उसने मूसा की पुस्तकों में अपने इरादे के संकेत दे दिए। भविष्यवज़्ताओं के द्वारा उसने खुलकर इसके सज़्बन्ध में बात की और नये नियम में इसे पूरी तरह से प्रकट किया।

इस अध्ययन में, ऍंडी ज़्लोर ने कलीसिया की स्थापना की ओर इशारा करती भविष्यवाणियां दिखाकर बहुत अच्छा काम किया है। उन्होंने कलीसिया के लिए परमेश्वर की तैयारी ही नहीं बल्कि कलीसिया, इसकी पहचान और इसके कार्य को बाइबल के दृष्टिकोण से भी दिखाया है।

इस पुस्तक से हमारे प्रभु की कलीसिया के पहले से कहीं अधिक समझने में हम सब को मदद मिलनी चाहिए। कलीसिया हमारे लिए भी उतनी ही महत्वपूर्ण होनी चाहिए जितनी परमेश्वर के लिए है। उसका सनातन कार्य पूर्ण प्रतिबद्धता की मांग करता है। डॉज़्टर ज़्लोर ने हमें कलीसिया को उस समय में जब उसकी योजना केवल परमेश्वर के मन में थी, देखने में सहायता करते हुए इसकी अनन्त महिमा की ओर हमारा ध्यान दिलाया है।

नील टी. प्रोयोर